मृत्युंजयितीर्थंकरस्तुतिः

-रचयित्री-
गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 513
ISBN-978-93-87891-30-2

मृत्युंजयितीर्थंकरस्तुतिः

–रचयित्री –

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org,
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2545	मूल्य
1100 प्रतियाँ	आश्विन शु. 11	16/-रु.
	9 अक्टूबर 2019	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादकः-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

डॉ. जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग—ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

आद्य वक्तव्य

-गणिनी ज्ञानमती

हस्तिनापुर में भगवान श्री शांतिनाथ मंदिर में बैठकर मैंने वीर सं. 2501, ईसवी सन् 1975 में एकाक्षरी छंद से प्रारंभ कर चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों की स्तुति रचना की, इसको मैंने 'कल्याणकल्पतरू' स्तोत्र नाम दिया। इसमें 145 प्रकार के छंदों का प्रयोग है एवं 213 पद्य हैं। यह स्तोत्र मेरे जीवन में कल्पवृक्ष के समान ही फलित हुआ है। यह श्रावण शुक्ला पूर्णिमा, दिनाँक-21-8-1975 में पूर्ण हुआ है। इसी प्रकार संस्कृत में चौबीस तीर्थंकरों की दो स्तुतियाँ और हैं, जिनमें से एक अनुष्टुप् छंद में है और दूसरी उपजाति छंद में है।

पुनश्च हिन्दी पद्य में चौबीस तीर्थंकर की स्तुति की है। इसके पहले भी त्रैलोक्य वंदना आदि व श्री बाहुबली स्तोत्र, श्री चन्द्रप्रभ स्तुति आदि अनेक स्तुतियाँ संस्कृत में रची हैं। अनेक स्तुतियों का पद्यानुवाद भी कर दिया है, जो कि सभी मुद्रित हो चुकी हैं।

अभी वीर नि. सं. 2544 में ईसवी सन् 2018 में मांगीतुंगी में ऋषभदेवपुरम्' में मैं ज्येष्ठ मास में अवस्थ हो गई, तभी लेटे-लेटे ही मैं सहजभाव से सप्तविभक्ति से समन्वित ऐसे श्री ऋषभदेव आदि की स्तुतियाँ लिखने लगी। प्रायः ये अक्रम से लिखीं पुनः स्वस्थ होकर मैंने क्रम से चौबीसों

तीर्थंकरों की स्तुति पूर्ण की और मैंने इसका 'मृत्युंजयितीर्थंकर स्तुति'' नाम किया क्योंकि मेरा ऐसा विश्वास है कि मैं इस स्तुति के प्रभाव से ही स्वस्थता प्राप्त कर मार्ग में अनेक तीर्थों की वंदना व इतनी लम्बी यात्रा करके आयी हूँ। मेरे द्वारा रचित संस्कृत स्तुति रचनाओं में एकाक्षरी छंद से लेकर 'कल्याणकल्पतरू' स्तोत्र और यह 'मृत्युंजयितीर्थंकर स्तुतिः' ये दोनों अद्भुत एवं अभूतपूर्व रचनाएँ हैं।

इनका फल मुझे अपनी आत्मा को 'पूर्णस्वस्थ' सिद्ध परमात्मा बनाने में निमित्त बने तथा सभी भव्यगण इन स्तुतियों से अपने जीवन में कल्पवृक्ष के समान इच्छित फल प्राप्त करते हुए आत्मा को मृत्युंजयी बनावें, यही मेरी भावना है।

-प्रकाशन सहयोग-

इस पुस्तक के प्रकाशन में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संघस्थ शिष्य बाल ब्रह्मचारी नवनीत जैन गंगवाल, बाल ब्र. संजय गंगवाल पुत्र श्री इन्दरचंद-सौ. राजकला गंगवाल, डोंबीवली-मुम्बई (महा.) परिवार का सहयोग प्राप्त हुआ है अतः संस्थान उनकी धर्मप्रभावना की भावनाओं का सम्मान करते हुए हम उनके प्रति बहुत-बहुत आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। -सम्पादक

भगवान ऋषभदेव विश्वशांति अहिंसा वर्ष की उपलब्धि

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैन शासन के वर्तमानयुगीन प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव इस धरा पर विश्वशांति के प्रथम अवतार हुए हैं। आज से करोड़ों वर्ष पूर्व शाश्वत तीर्थ अयोध्या में उनका जन्म हुआ था। सौधर्म इन्द्र एवं देव परिवार द्वारा उनके पंचकल्याणक इसी भारत वसुन्धरा पर मनाए गए। उन्होंने प्रयाग में दीक्षा धारण की, पुरिमतालपुर के उद्यान प्रयाग में ही उन्हें दिव्य केवलज्ञान हुआ और कैलाशपर्वत से मोक्षधाम की प्राप्ति की।

पुरुदेव, वृषभदेव आदि 1008 नामों से प्रसिद्ध भगवान ऋषभदेव की यशस्वती और सुनन्दा रानी से 101 पुत्र एवं दो पुत्रियाँ थीं, जिन्होंने क्रम से भगवान के समवसरण में जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की। भगवान ने गृहस्थावस्था में राज्य संचालन करते हुए अपने सभी पुत्रों को सम्पूर्ण विद्या, कलाओं में निष्णात किया। ब्राह्मी-सुन्दरी पुत्रियों को अक्षर एवं अंकज्ञान सिखाकर विद्याओं में निष्णात किया, जो वर्तमान में ब्राह्मी एवं अंकलिपि के नाम से प्रसिद्ध है। कर्मभूमि के प्रारंभ में भयभीत प्रजा को असि, मषि आदि षट्क्रियाओं द्वारा जीवन जीने की कला सिखाई और दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति होने पर सम्पूर्ण विश्व को अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अनेकांतवाद आदि सर्वोदयी-कल्याणकारी सिद्धान्तों से दिव्य उपदेशामृत का पान कराया, जो आज भी प्राणीमात्र के लिए कल्याणकारी हैं। उसी तीर्थंकर परम्परा में महावीर स्वामी पर्यंत सभी 23 तीर्थंकरों ने उन्हीं कल्याणकारी सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है।

आज वर्तमान विश्व में उपस्थित आतंकवाद, हिंसा, विनाश, अशांति, परस्पर, शत्रुता, विद्वेष, बदला लेने की भावना आदि

विकृतियों से ग्रसित हो रही मानवता के लिए ''अहिंसामयी शाश्वत धर्म'' का शीतल जल ही इन अग्नि ज्वालाओं के उपशमन में सहयोगी हो सकता है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक रूप से की गई धर्माराधना, मंत्रानुष्ठान, विधि-विधान आदि सम्पूर्ण वातावरण को प्रभावित करके क्षेम-सुभिक्ष-शांति-सौहार्द की स्थापना करने में अत्यन्त कार्यकारी होते हैं, यह परम सत्य है। इन्हीं विश्वकल्याणकारी भावनाओं से ओतप्रोत होकर भारतगौरव दिव्यशक्ति परम उपकारी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने ऋषभगिरि-मांगीतुंगी में विराजमान विश्व के सर्वाधिक उत्तुंग 108 फुट भगवान ऋषभदेव के श्रीचरणों में स्थित होकर भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती, चैत्र कृ. नवमी, 10 मार्च 2018 के पावन अवसर पर ''भगवान ऋषभदेव विश्वशांति वर्ष'' मनाने की प्रेरणा प्रदान की, जो एक वर्ष तक हम सबको व्यक्तिगत शांति, सामाजिक शांति, राष्ट्रीय शांति एवं विश्वशांति हेतु कटिबद्ध कर रहा है। इस विश्वशांति वर्ष को सम्पूर्ण विश्व में व्यापक स्तर पर प्रसारित करने की भावना से उसी मांगीतुंगी की पवित्र धरा पर पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से ''विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन'' का भव्य आयोजन 22 अक्टूबर 2018 को किया गया, जिसका उद्घाटन भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ जी कोविन्द के द्वारा किया गया और उस दिन से लेकर लगातार स्थान-स्थान पर विश्वशांति हेतु जाप्य, मण्डल विधान, अखण्ड पाठ, संगोष्ठी, आलेख-लेखन व्याख्यान माला, शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगोष्ठी, बाल संस्कार शिविर, चित्र प्रदर्शनी आदि आयोजित किए जा रहे हैं, जिससे विश्वशांति के इस **महाआयोजन** में जन-जन की भावनाएँ किसी न किसी रूप में जुड़ रही हैं, जो विश्व में शांति की कामना एवं उसमें सहभागिता का भाव रखने से प्राणीमात्र के जीवन में सुख शांति का समावेश करेंगी।

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष (२०१९-२०२०)

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

स्वस्तिश्री मूलसंघ में कुन्दकुन्दाम्नाय, सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगण में सम्पूर्ण जगत के लिए मंगल-स्वरूप बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैन जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज हुए हैं, जिनका जन्म दक्षिण भारत के भोजग्राम में धर्मनिष्ठ श्रेष्ठी श्री भीमगौंडा पाटील की पतिव्रता धर्मपरायण पत्नी सत्यवती की पवित्र कुक्षि से ईसवी सन् 1872 में आषाढ़ वदी षष्ठी की तिथि में हुआ। कर्नाटक में स्थित जिला बेलगांव में सातगौंडा पाटील के रूप में जन्मे इस भोजग्राम के बालक ने एक अध्यात्मिक सूर्य बनकर सम्पूर्ण विश्व के मानसपटल पर जिनधर्म को आलोकित कर दिया। बचपन से ही त्याग और वैराग्य से इस बालक सातगौंडा पाटिल ने मात्र माता-पिता की संतुष्टि के लिए घर में रहना स्वीकार किया किन्तु बाल विवाह होकर भी ब्रह्मचारी रहे और माता-पिता के स्वर्गवास के बाद ज्येष्ठ शु. त्रयोदशी, सन् 1914 में महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के उत्तूर ग्राम में मुनि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण कर ली। अपनी वैराग्य भावना को वृद्धिंगत करते हुए उन्होंने सन् 1917 में गिरनार जी सिद्धक्षेत्र की वंदना करते हुए भगवन के श्रीचरणों में ऐलक दीक्षा ले ली, पुनः कर्नाटक के यरनाल ग्राम में सन् 1920 में भव्य पंचकल्याणक के समय उत्पन्न वैराग्यभाव से ओतप्रोत मुनि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज से मुनि दीक्षा ग्रहण कर मुनि श्री शांतिसागर जी कहलाए। आश्विन शु. 11, सन् 1924 में महाराष्ट्र के समडोली ग्राम में उन्हें चतुर्विध संघ द्वारा आचार्य पद प्रदान किया गया। आचार्यश्री ने अनेक व्रत, उपवासों द्वारा अपनी आत्मा को कुंदन बनाते हुए अनेक भव्यात्माओं को दीक्षित कर मोक्षमार्ग में लगाया, अनेकों उपसर्ग सहन किए। अपने 35 वर्षों के दीक्षित जीवन में साढ़े 25 वर्ष उपवास में व्यतीत कर वे मानो कुछ अंशों

में ऋद्धि समन्वित हो गये।

बीसवीं सदी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले आगम अनुकूल चर्या से कलियुग में मोक्षमार्ग दिखाने वाले उन आचार्यश्री को गजपंथा जी सिद्धक्षेत्र पर सन् 1937 में चारित्रचक्रवर्ती पद से अलंकृत किया गया। आचार्यश्री की प्रेरणा से कुंभोज, कुंथलगिरि, दहीगांव आदि क्षेत्र तीर्थस्वरूप बन गए। षट्खण्डागम, धवला आदि ग्रंथों को ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण कराकर जिनागम की रक्षा कर आचार्यश्री ने हम सभी पर महान उपकार किया। उन आचार्यश्री का समाधिमरण द्वि. भाद्रपद शुक्ल दूज, सन् 1955 में कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर हुआ। आज वह महान आत्मा हमारे मध्य नहीं है और अनंतकाल के अंत तक यह परम्परा अक्षुण्ण चलेगी, यही मुझे विश्वास है।

वस्तुतः श्रमण परम्परा और श्रावक परम्परा के उन्नायक उन आचार्यश्री के उपकार न ही भुलाए जा सकते हैं और न ही चुकाए जा सकते हैं अतएव बच्चे-बच्चे से उनका कर्तव्य निर्वाह का अवसर देकर, उन प्रथमाचार्य गुरुवर की मुनि दीक्षा के 99वें वर्ष में ''मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष'' मनाने की पावन प्रेरणा देकर 67 वर्षीय दीक्षा-साधना से पवित्र, सर्वोच्च जैन साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने हम सभी पर महान उपकार किया है। पूज्य माताजी बीसवीं सदी की एकमात्र आर्यिका माता हैं, जिन्होंने आचार्य श्री के 3 बार प्रत्यक्ष दर्शन कर उनका अंतिम उपदेश और सान्निध्य प्राप्त किया है, उन गुरु माँ की मंगल भावना को साकार करने हेतु शाश्वत तीर्थ अयोध्या से दीप प्रज्ज्वलनपूर्वक फाल्गुन शु. 14, 20 मार्च 2019 से एक वर्ष तक यह वर्ष ''मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष'' के रूप में मनाते हुए भारत के कोने-कोने में आचार्यश्री के पूजन-विधान, संगोष्ठी, प्रश्नमंच, जाप्यानुष्ठान, पेंटिंग-रंगोली आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित हो रही हैं। आचार्यश्री के विशेष प्रतीक चिन्ह, चित्र, प्रतिमाएँ, स्मारक, कीर्तिस्तंभ, गुरुमंदिर आदि निर्माणकार्य भी चल रहे हैं। विशेषतः सम्मेदशिखर जी सिद्धक्षेत्र पर आचार्यश्री शांतिसागर धाम इस वर्ष की अनुपम सौगात है अतः आप सब भी गुरुगुणों की प्रभावना करके अपनी कृतज्ञांजलि अर्पित करें।

प्रथम पट्टाचार्यश्री वीरसागर जी महाराज का संक्षिप्त परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भारतवर्ष की सस्यश्यामला भूमि जिनशासन के गौरव, अनेक दिव्य महामनीषी संत, ऋषि-महर्षियों को पैदा कर आर्ष परम्परा की प्रखरता को दर्शाती रही है, उनमें से ही जिनशासन के आध्यात्मिक सूर्य बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज हुए हैं, जिन्होंने बीसवीं शताब्दी में मुनि परम्परा को पुनर्जीवित किया, उन्हीं पूज्य गुरुवर के प्रथम पट्टशिष्य महानतपस्वी, आचार्यप्रवर, श्रमण शिरोमणि, परमवंदनीय आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज हुए, जो महाराष्ट्र प्रान्त के औरंगाबाद जिले के 'ईर' ग्राम में श्रावक शिरोमणि सेठ श्री रामसुख जी की धर्मपत्नी सौ. भागूबाई की पवित्र कुक्षि से विक्रम सं. 1939, सन् 1876 में आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा (गुरुपूर्णिमा) की पवित्र तिथि में जन्में। खण्डेवाल जातीय गंगवाल गोत्रीय उस बालक के जन्म से पूर्व ही माँ ने रात्रि के पिछले प्रहर में सफेद बैल देखा था तथा तीर्थवंदना का दोहला भी उन्हें हुआ था अतः माता-पिता ने बड़े प्यार से उस बालक का नाम हीरालाल रखा, जो यथा नाम तथा गुण के अनुसार सचमुच हीरा था।

बालक हीरालाल ने हिन्दी व उर्दू भाषाओं का सातवीं कक्षा तक अध्ययन किया पुनः पिता की आज्ञानुसार व्यापार प्रारंभ कर दिया किन्तु वैराग्य भाव और भोगों से उदासीनता के कारण पूजा-स्वाध्याय में मन को लगाते हुए विवाह बंधन में बंधने से इंकार कर दिया। सन् 1916 में औरंगाबाद के निकट कचनेर जी अतिशय क्षेत्र पर वे धार्मिक पाठशाला खोलकर बालकों को निःशुल्क अध्ययन कराने लगे और गुरुजी के नाम से विख्यात हो गए। यह अध्ययन का क्रम कुछ वर्षों तक चला पुनः सन् 1921 में नांदगांव में ऐलक श्री पन्नालाल जी के चातुर्मास का समाचार ज्ञात होने पर दर्शन की तीव्र लालसा से वहाँ पहुँच कर वहाँ के एक श्रावक श्री खुशालचंद जी के साथ उन्होंने सप्तम प्रतिमा ले ली और राम-लक्ष्मण

की जोड़ी के सदृश वैराग्य को वृद्धिंगत करते हुए घी, नमक, तेल और मीठा का जीवन पर्यन्त त्याग कर दिया। एक बार दक्षिण के कोन्नूर ग्राम में चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के दर्शनार्थ गये थे, दोनों परीक्षा प्रधानी शिष्य जाकर उनकी चर्या से अत्यन्त प्रभावित हो उनके परम शिष्य बन गए और संसार का सम्पूर्ण मोह त्यागकर फाल्गुन शु. सप्तमी, सन् 1923 को क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण कर "क्षुल्लक वीरसागर व चन्द्रसागर" बन गए। पुनः वैराग्य भाव को वृद्धिंगत करते हुए आश्विन शु. एकादशी, सन् 1924 में महाराष्ट्र के समडोली ग्राम में आचार्यश्री से ही आप मुनि दीक्षा प्राप्त कर "मुनि श्री वीरसागर जी" कहलाए। अपने गुरु के साथ दक्षिण से उत्तर तक पदविहार करते हुए उन्होंने 12 चातुर्मास किए। उस समय आचार्यश्री ने सभी को अलग-अलग विहार करने का आदेश दे दिया, तब गुरुआज्ञा शिरोधार्य कर सर्वत्र विहार करते हुए उन्होंने अनेक भव्यात्माओं को जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान की और मोक्षमार्ग में आरूढ़ किया। सन् 1955 में कुंथलगिरि पर आचार्यश्री शांतिसागर महाराज ने सल्लेखना ग्रहण कर आचार्यपद का त्याग किया, उस समय उन्होंने आचार्यकल्प मुनि श्री वीरसागर महाराज को अपना पट्टाचार्य घोषित किया, उस समय वीरसागर महाराज जयपुर (खानिया) राज. में विराजित थे। द्वितीय भाद्रपद कृ. 7, सन् 1955 को आचार्यश्री की समाधि के पश्चात् चतुर्विध संघ सान्निध्य में आचार्य पदारोहण कर मुनि श्री को आचार्य पदवी प्रदान की गई। आचार्यश्री को कर्मप्रकृतियों के चिंतन में विशेष आल्हाद होता था, जिसका प्रतिफल था कि उन्होंने बिना इंजेक्शन आदि के अदीठ के फोड़े का आपरेशन करा लिया। आचार्यश्री मितभाषी, सूक्ति रूप में अपनी बात कहते थे, जैसे-सुई का काम करो कैंची का नहीं। सन् 1957 वि. सं. 2014, आश्विन कृ. अमावस्या को जयपुर खानिया में उनकी समाधि हो गई। आज आचार्यश्री भौतिक शरीर से हमारे बीच नहीं है किन्तु उनकी महान शिष्या परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन कर हम उन गुरुवर की महानता का परिज्ञान कर सकते हैं, ऐसे गुरुवर को शत-शत वंदन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 400 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर

(नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्मित 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेदशिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ मांगीतुंगी (2015-2016) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
1. श्री ऋषभदेव स्तुतिः	15	20. श्री मुनिसुव्रतनाथ स्तुतिः	25
2. श्री अजितनाथ स्तुतिः	16	21. श्री नमिनाथ स्तुतिः	25
3. श्री संभवनाथ स्तुतिः	16	22. श्री नेमिनाथ स्तुतिः	26
4. श्री अभिनंदननाथ स्तुतिः	17	23. श्री पार्श्वनाथ स्तुतिः	26
5. श्री सुमतिनाथ स्तुतिः	17	24. श्री महावीर स्तुतिः	27
6. श्री पद्मप्रभ स्तुतिः	18	25. प्रशस्ति;	27
7. श्री सुपार्श्वनाथ स्तुतिः	18	26. श्री आदिनाथ स्तुति	
8. श्री चन्द्रप्रभ स्तुतिः	19	(सप्तविभक्ति समन्वित)	28
9. श्री पुष्पदंतनाथ स्तुतिः	19	27. श्री गौतम स्वामी स्तुतिः	29
10. श्री शीतलनाथ स्तुतिः	20	28. श्री सरस्वती स्तुतिः	30
11. श्री श्रेयांसजिन स्तुतिः	20	29. श्री षट्खण्डागम स्तुतिः	30
12. श्री वासुपूज्य स्तुतिः	21	30. श्री शांतिसागर स्तुतिः	31
13. श्री विमलनाथ स्तुतिः	21	31. श्री वीरसागर स्तुतिः	32
14. श्री अनंतनाथ स्तुतिः	22	32. जिनस्तुति	33
15. श्री धर्मनाथ स्तुतिः	22	33. तीर्थंकर स्तुति	33
16. श्री शांतिनाथ स्तुतिः	23	34. जम्बूस्वामी स्तुति	33
17. श्री कुंथुनाथ स्तुतिः	23	35. प्रथम पंचमहापुरुष स्तुतिः	34
18. श्री अरनाथ स्तुतिः	24	36. प्रथम पंचमहापुरुष स्तुति	35
19. श्री मल्लिनाथ स्तुतिः	24		

भक्ति समर्पण

श्री 1008 भगवान ऋषभदेव की छत्रछाया में मांगीतुंगी में ऋषभदेवपुरम् में ज्येष्ठ मास में अस्वस्थ अवस्था में मैंने भगवान ऋषभदेव की भक्ति से प्रेरित होकर लेटे-लेटे सप्तविभक्ति समन्वित स्तुति रचना करके स्तुति की।

पुनः ज्येष्ठ मास में अक्रम से स्तुति बनाकर क्रम से चौबीसों भगवन्तों की स्तुति पूर्ण की। आश्विन शु. 15 को स्तुति रचना पूर्णकर प्रातः कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा को ऋषभगिरि पर्वत जाकर 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव के श्रीचरणों में यह स्तुति समर्पण करते हुए मैंने इसे "मृत्युंजयि तीर्थंकर स्तुति" नाम दिया, क्योंकि मेरी यह श्रद्धा है कि भगवन्तों की भक्ति-स्तुति से ही असाता प्रकृति सातारूप में संक्रमण कर जाती है तभी स्वस्थता आदि लाभ प्राप्त होते हैं अर्थात् स्तुति का फल प्राप्त हो जाता है।

यहाँ शरीर की जन्मभूमि टिकैतनगर में ईसवी सन् 2019 के वर्षायोग में इस स्तुति को मुद्रित कराने का योग आया।

यहाँ भगवान पार्श्वनाथ जो कि मुझे संयमनिधि के प्रदाता हैं मेरे मनोरथ को सफल करने वाले हैं। पुनश्च चौबीसों तीर्थंकर भगवान भी अतिशयकारी प्रसिद्ध हैं। इन सभी भगवन्तों को कोटि-कोटि नमोस्तु करते हुए यहाँ परोक्ष से ही मांगीतुंगी के 108 फुट उत्तुंग सर्वोच्च, सर्वज्येष्ठ, सर्वश्रेष्ठ श्री ऋषभदेव के श्रीचरणों में अनंतानंतबार नमोस्तु करते हुए उन्हीं के श्रीचरणों में श्रद्धापूर्वक इस स्तुति रचना को समर्पित कर रही हूँ।

तिथि-आश्विन शु. 1,
वि.नि.सं. 2545, दि.-29-9-19
टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

-गणिनी ज्ञानमती

मृत्युंजयितीर्थंकर स्तुतिः

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

रचयित्री-गणिनी ज्ञानमती माताजी

(1) श्री ऋषभदेव स्तुतिः

-अनुष्टुप् छंदः-

प्रभुः ऋषभदेवस्त्वं, जगत्सृष्टा जगद्गुरूः।
ऋषभदेवमानौमि, सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।1।।

हतः ऋषभदेवेन, स्वकर्मनिचयः स्वयं।
नमः ऋषभदेवाय, धर्मतीर्थप्रवर्तिने।।2।।

तीर्थं ऋषभदेवाद् हि, स्वर्गमोक्षविधायकम्।
धर्मः ऋषभदेवस्य, साधुगृहि-द्विभेदतः।।3।।

भक्तिं ऋषभदेवेऽहं, करोमि सर्वसौख्यदाम्।
ऋषभदेव! मां रक्ष, निमज्जंतं भवाम्बुधौ।।4।।

(2) श्री अजितनाथ स्तुतिः

श्रीमानजितनाथस्त्वं, द्वितीयस्तीर्थकृन्मतः।
श्रयाम्यजितनाथं त्वां, संसारोत्तरणेच्छया।।1।।

मार्गोऽप्यजितनाथेन, शिवस्योद्घाटितो गिरौ।
तुभ्यमजितनाथाय, नमो नमोऽस्त्वनंतशः।।2।।

तीर्थमजितनाथात् हि, सर्वेषां हितशासनं।
श्रीमतोऽजितनाथस्य, धर्मः प्राणिदयाकरः।।3।।

तीर्थेशेऽजितनाथे मे, प्रीतिः नित्यं शिवप्रदा।
अजितनाथ! मां रक्ष, यावन्निर्वाणमाप्नुयाम्।।4।।

(3) श्री संभवनाथ स्तुतिः

तीर्थकृत्-संभवस्वामी, त्वं भवांभोधितारकः।
संभवस्वामिनं नित्य-माश्रयन्ति सुखेप्सवः।।1।।

संभवस्वामिना लोके, मोक्षमार्गः प्रदर्शितः।
संभवस्वामिने नित्यं, नमोऽस्तु कोटि-कोटिशः।।2।।

संभवस्वामिनो भव्याः, तरन्ति भवसागरम्।
संभवस्वामिनो धर्मो, जन्ममृत्युविनाशकः।।3।।

संभवस्वामिनि प्रीतिः, भवे भवे भवेन्मम।
प्रभो! संभवस्वामिन्! त्वं, पाहि मां भवदुःखतः।।4।।

(4) श्री अभिनंदननाथ स्तुतिः

अभिनन्दननाथस्त्वं, भव्यानंदप्रदायकः।
अभिनंदननाथं त्वा-माश्रयन्ति जना मुदा।।1।।

अभिनंदननाथेन, प्रोक्ता सिद्धेर्विधिर्भुवि।
अभिनंदननाथाय, नमोऽस्तु त्रिविधं मम।।2।।

अभिनंदननाथाद् हि, स्वात्मानंदं वितन्वते।
अभिनंदननाथस्य, वाणी स्वात्मसुखाकरा।।3।।

अभिनन्दननाथेऽहं, कुर्वे भक्तिं शिवप्रदां।
अभिनंदननाथ! त्वं, ईप्सितं मम पूरय।।4।।

(5) श्री सुमतिनाथ स्तुतिः

श्रीमान् सुमतिनाथस्त्वं, मोहध्वांतविनाशकः।
भव्याः सुमतिनाथं त्वां, भजंतीह सुबुद्धये।।1।।

श्रीमत्सुमतिनाथेन, हताः कर्मारयः स्वयं।
तस्मै सुमतिनाथाय, नमः स्वकर्महानये।।2।।

तीर्थं सुमतिनाथाद् यत्, तत् सर्वेषां सुखावहं।
श्रीमत् सुमतिनाथस्य, शरण्यं चरणद्वयं।।3।।

तस्मिन् सुमतिनाथे हि, मतिं स्थिरां करोम्यहं।
प्रभो! सुमतिनाथ! त्वं, देहि मे पंचमीं गतिं।।4।।

(6) श्री पद्मप्रभ स्तुतिः

श्रीपद्मप्रभदेवस्त्वं, लक्ष्म्यंतर्बाह्यसंयुतः।
श्रीपद्मप्रभदेवं त्वां, श्रित्वा लक्ष्मीधरा जनाः।।1।।

श्रीपद्मप्रभदेवेन, लब्धाऽर्हज्ज्ञानश्रीः स्वयं।
श्रीपद्मप्रभदेवाय, दत्ता भक्तिः सुमाञ्जलिः।।2।।

श्रीपद्मप्रभदेवाद् हि, मुक्तिश्रीवश्यमाप्नुते।
श्रीपद्मप्रभदेवस्यानंतानंता गुणा मताः।।3।।

श्रीपद्मप्रभदेवे हि, भक्तिः स्थिरा भवेन्मम।
हे पद्मप्रभदेव! त्वं, यच्छ स्वात्म-श्रियं मम।।4।।

(7) श्री सुपार्श्वनाथ स्तुतिः

श्रीसुपार्श्वजिनो भव्यान्, स्वात्मपार्श्वं नयत्यमून्।
श्रीसुपार्श्वजिनं नित्यं, स्तुवन्ति गणनायकाः।।1।।

श्रीसुपार्श्वजिनेनात्र, कर्मपाशच्छिदः स्वयं।
श्रीसुपार्श्वजिनायाद्य, कोटिशो मे नमो नमः।।2।।

श्रीसुपार्श्वजिनाद् भव्याः, कुदृक्पार्श्वात् विदूरगाः।
श्रीसुपार्श्वजिनस्य द्वौ, मार्गौ सन्मुक्तिपार्श्वगौ।।3।।

श्रीसुपार्श्वजिने पार्श्वे, मुनीन्द्रा नृसुराः स्थिताः।
श्रीसुपार्श्वजिन! त्वं मे, मतिं स्वपार्श्वगां दिश।।4।।

(8) श्री चन्द्रप्रभ स्तुतिः

श्रीचन्द्रप्रभदेवस्त्वं, चंद्रकांतिसमप्रभः।
श्रीचन्द्रप्रभदेवं त्वां, नमन्ति स्वसुखाप्तये।।1।।

श्रीचन्द्रप्रभदेवेन, मोहध्वांतमपाकृतं।
श्रीचन्द्रप्रभदेवाय, नमः स्वात्मगुणाप्तये।।2।।

श्रीचन्द्रप्रभदेवात् हि, ज्ञानदीधितयः स्फुटाः।
श्रीचन्द्रप्रभदेवस्य, भासंते भाक्तिकाः भुवि।।3।।

श्रीचन्द्रप्रभदेवेऽहं, दधे नित्यं स्वमानसं।
श्रीचन्द्रप्रभदेव! त्वं, मह्यं देहि स्वसंपदं।।4।।

(9) श्री पुष्पदंतनाथ स्तुतिः

श्रीपुष्पदंततीर्थेशः, भव्यपंकजभास्करः।
श्रीपुष्पदंततीर्थेशं, भक्त्या नमन्ति खेचराः।।1।।

श्रीपुष्पदंतनाथेन, धर्मतीर्थं प्रवर्तितं।
श्रीपुष्पदंतनाथाय, नमः कुर्वन्ति साधवः।।2।।

श्रीपुष्पदंततीर्थेशात्, क्षेमं सर्वत्र जायते।
श्रीपुष्पदंतनाथस्य, विश्वस्मिन् वैरिणो न हि।।3।।

श्री पुष्पदंततीर्थेशे, मतिं धृत्वा सुखी भव।
श्री पुष्पदंततीर्थेश! त्वं मां रक्ष जगद्गुरो!।।4।।

(10) श्री शीतलनाथ स्तुतिः

श्रीमान् शीतलनाथस्त्वं, स्वात्मसौख्यप्रदायकः।
शीतलनाथतीर्थेशं, श्रित्वानंदं श्रयन्त्यपि।।1।।

श्रीमत् शीतलनाथेन, शीती भूता जना इह।
श्रीमत् शीतलनाथाय, नमोऽस्तु कोटिशो मम।।2।।

तीर्थं शीतलनाथाद् स्यात्, चंदनादपि शीतलं।
श्रीमत् शीतलनाथस्य वाणीह्यमृतवत् भुवि।।3।।

विभौ शीतलनाथे हि, चित्तं स्थिरं करोम्यहं।
प्रभो! शीतलनाथ! त्वं, कृपां कृत्वा पुनीहि मां।।4।।

(11) श्री श्रेयांसजिन स्तुतिः

श्रीश्रेयांसजिनेन्द्रस्त्वं, श्रेयोमार्गविधायकः।
श्रीश्रेयांसजिनेन्द्रं त्वां, श्रित्वा मिथ्यात्वदूरगाः।।1।।

श्रीश्रेयांसजिनेन्द्रेण, स्वरागाद्याः स्वयं हताः।
श्रीश्रेयांसजिनेन्द्राय, नमो नमोऽस्तु श्रद्धया।।2।।

श्रीश्रेयांसजिनेन्द्राद् हि-लब्धं रत्नत्रयं जनैः।
श्रीश्रेयांसजिनेन्द्रस्य, वाक्सुधा शिवदायिनी।।3।।

श्रीश्रेयांसजिनेन्द्रेऽस्मिन्, बहिरंतः-श्रियः स्थिताः।
श्रीश्रेयांसजिनेन्द्र! त्वं, यच्छ श्रेयस्करीं मतिम्।।4।।

(12) श्री वासुपूज्य जिनस्तुतिः

वासुपूज्यजिनेन्द्रस्त्वं, सुरासुरगणैर्नुतः।
वासुपूज्यजिनेन्द्रं त्वां, श्रित्वा भव्याः पुनन्ति स्वं।।1।।

वासुपूज्यजिनेन्द्रेण, पंचकल्याणकाः श्रिताः।
वासुपूज्यजिनेन्द्राय, कोटिशो मे नमो नमः।।2।।

वासुपूज्यजिनेन्द्रात् स्यात्, धर्मस्य महिमा भुवि।
वासुपूज्यजिनेन्द्रस्य, भाक्तिकाः इह विश्रुताः।।3।।

वासुपूज्यजिनेन्द्रेऽद्य, भक्त्या दधे स्वमानसं।
वासुपूज्यजिनेन्द्र! त्वं, यच्छ मे गुणसंपदम्।।4।।

(13) श्री विमलनाथ स्तुतिः

श्रीमान् विमलनाथस्त्वं, शून्यः कर्ममलादिभिः।
श्रीमद्विमलनाथं त्वां, नमंति त्रिदशाधिपाः।।1।।

श्रीमद् विमलनाथेन, स्वस्यात्मा विमलीकृतः।
तस्मै विमलनाथाय, नमोऽस्तु परमात्मने।।2।।

श्रीमद्विमलनाथाद् हि, नास्ति कश्चिद् हितंकरः।
श्रीमद्विमलनाथस्य, श्रयामि चरणद्वयम्।।3।।

श्रीमद्विमलनाथे मे, सर्वकालं रुचिर्भवेत्।
प्रभो! विमलनाथ! त्वं, मह्यं यच्छाचलं पदम्।।4।।

(14) श्री अनन्तनाथ स्तुतिः

श्रीमाननंतनाथस्त्वं, अंतकांतकविश्रुतः।
श्रीमदनंतनाथं त्वां, नमन्ति नृसुरासुराः।।1।।

श्रीमतानंतनाथेना-नंतजीवदया कृता।
श्रीमतेऽनंतनाथाय, मम नमोऽस्त्वनंतशः।।2।।

श्रीमतोऽनंतनाथात् हि, तीर्थमनंतसौख्यकृत्।
श्रीमतोऽनंतनाथस्य, भक्तिर्भवान्तकारिणी।।3।।

श्रीमदनंतनाथे हि, नतिं भक्तिं सदा दधे।
श्रीमन्नंतनाथ! त्वं, देह्यनन्तचतुष्टयम्।।4।।

(15) श्री धर्मनाथ स्तुतिः

तीर्थकृद्धर्मनाथस्त्वं, धर्मसृष्टेर्विधायकः।
तीर्थकृद्धर्मनाथं त्वां, नमामि धर्मवृद्धये।।1।।

तीर्थकृद्धर्मनाथेन, दयाधर्मो निरूपितः।
तीर्थकृद्धर्मनाथाय, नमः कुर्वन्ति साधवः।।2।।

तीर्थकृद्धर्मनाथाद् हि, जातं तीर्थ-मनुत्तरं।
तीर्थकृद्धर्मनाथस्य, भाक्तिकाः त्रिदशाधिपाः।।3।।

तीर्थकृद्धर्मनाथे हि, धर्माः सर्वे सदा स्थिताः।
तीर्थेश! धर्मनाथ! त्वं, संसारात् मां समुद्धर।।4।।

(16) श्री शांतिनाथ स्तुतिः

तीर्थकृत्-शांतिनाथस्त्वं, भव्यानां शांतिकारकः।
शान्तिनाथमहं प्रीत्या-राधयामि भजाम्यपि।।1।।

शांतिनाथेन चक्रित्वं, मदनत्वं पदं श्रितं।
शान्तिनाथाय मे नित्यं, नमो नमोऽस्त्वनंतशः।।2।।

शान्तिनाथाद् महत्तीर्थं-विश्वशांतिप्रदायकं।
शान्तिनाथस्य तीर्थस्याविच्छिन्नाभूत् परम्परा।।3।।

शान्तिनाथे मतिं तावत्, यावन्न स्यात् शिवो मम।
भोः शांतिनाथ! मे यच्छ, शांतिमात्यन्तिकीं त्वरम्।।4।।

(17) श्री कुंथुनाथ स्तुतिः

भगवान् कुंथुनाथस्त्वं, सर्वप्राणिहितंकरः।
भगवत्कुंथुनाथं त्वां, नमन्ति नृसुरासुराः।।1।।

भगवत्कुंथुनाथेन, दयाधर्मः प्रदर्शितः।
भगवत्कुंथुनाथाय, नमोऽस्तु कोटिशो मम।।2।।

भगवत्कुंथुनाथाद् हि, सार्वभौमो वृषो भुवि।
भगवत्कुंथुनाथस्य, पादपद्मं श्रयाम्यहं।।3।।

भगवत्कुंथुनाथेऽत्र, रतिं कुर्वन्ति साधवः।
भगवन्! कुंथुनाथ! त्वं, पूर्णं ज्ञानं प्रयच्छ मे।।4।।

(18) श्री अरनाथ स्तुतिः

अरनाथो भगवांस्त्वं, मोहारीन् घातकः स्वयं।
त्वामरनाथतीर्थेशं, श्रित्वा भव्या जयन्त्यरीन्।।1।।

अरनाथेन संप्रोक्तो, धर्मः सर्वहितंकरः।
अरनाथाय मे भक्त्या, नमोऽस्तु जन्महानये।।2।।

अरनाथाद् हि संभूता, वाणी सर्वत्र क्षेमदा।
अरनाथस्य षट्खंडं, साम्राज्यं धर्म संस्कृतं।।3।।

अरनाथे स्थिरा भक्तिः, यावत् तावत् न मे शिवं।
भो अरनाथ! मे यच्छ, ध्यानं स्वात्मैकचिन्तनं।।4।।

(19) श्री मल्लिनाथ स्तुतिः

मल्लिनाथो जिनेन्द्रस्त्वं, कर्ममल्लप्रहारकः।
मल्लिनाथं शरण्यं त्वां, शरणमागतोऽस्म्यहं।।1।।

मल्लिनाथेन त्रैरत्नं, श्रित्वा त्रैलोक्यनायकः।
मल्लिनाथाय नित्यं ते, नमोस्त्वनंतशो मम।।2।।

मल्लिनाथात् जगत्प्राणी, यममल्लं जयत्यपि।
मल्लिनाथस्य वाणीयं, त्रयमल्लस्य घातिनी।।3।।

मल्लिनाथे गुणा नान्ताः, त्रैलोक्यनाथज्ञायकाः।
भो मल्लिनाथ! मां पाहि, निमज्जंतं भवाम्बुधौ।।4।।

(20) श्री मुनिसुव्रतनाथ स्तुतिः

मुनिसुव्रतनाथस्त्वं, महाव्रतप्रदायकः।
मुनिसुव्रतनाथं त्वां, श्रयन्ति भव्यपुंगवाः।।1।।

मुनिसुव्रतनाथेन, दुःखी प्राणी समुद्धृतः।
मुनिसुव्रतनाथाय, कोटिशो मे नमो नमः।।2।।

मुनिसुव्रतनाथाद् हि, सार्वो धर्मः प्रवर्तितः।
मुनिसुव्रतनाथस्य, भाक्तिका नृसुरासुराः।।3।।

मुनिसुव्रतनाथेऽहं, सद्भक्तिं स्थायिनीं दधे।
मुनिसुव्रतनाथ! त्वं, भवक्लेशात् सुरक्ष मां।।4।।

(21) श्री नमिनाथ स्तुतिः

श्री नमिनाथतीर्थेशः, त्वं भगवान् जगद्हितः।
नमिनाथं नमन्तीह, भूर्भुवः स्वः सुरेश्वराः।।1।।

नमिनाथेन धर्मोऽत्र, सर्वमान्यः प्रदर्शितः।
नमिनाथाय मे नित्यं, नमोऽस्तु भवहानये।।2।।

नमिनाथाद् जगत्पूज्यं, तीर्थं जातं मुनीहितं।
नमिनाथस्य भक्त्यात्र, गुणान् गृण्हन्ति साधवः।।3।।

नमिनाथे यतीन्द्राश्च, स्थापयन्ति मनो मुदा।
हे नमिनाथ! मच्चित्तं, पुनातु मोहपंकतः।।4।।

(22) श्री नेमिनाथ स्तुतिः

नेमिनाथो जिनेन्द्रस्त्वं, दीक्षालक्ष्मीः समाश्रितः।
नेमिनाथं नमामि त्वां, यमनियमप्राप्तये।।1।।

नेमिनाथेन लोकेऽस्मिन्, जीवदया प्रदर्शिता।
नेमिनाथाय भक्त्या मे, नमोऽस्तु कोटिकोटिशः।।2।।

नेमिनाथाद् महातीर्थं, ऊर्जयन्तं भुवि श्रुतं।
नेमिनाथस्य भक्ता हि, कृष्णहलभृदादयः।।3।।

नेमिनाथे मनो बद्धं, वरदत्तगणीश्वरः।
हे नेमिनाथ! मां पाहि, यथाख्यातं प्रयच्छ मे।।4।।

(23) श्री पार्श्वनाथ स्तुतिः

श्री पार्श्वनाथतीर्थेश, उपसर्गजयी महान्।
पार्श्वनाथं नमन्तीह, भक्ताः कष्टप्रहाणये।।1।।

पार्श्वनाथेन सद्भक्ताः, भवन्तीह सहिष्णवः।
पार्श्वनाथाय सद्भक्त्या-ऽनन्तानंता नमोऽस्तु मे।।2।।

पार्श्वनाथाद् क्षमाभावैः, भक्तोऽभूत् कमठो रिपुः।
पार्श्वनाथस्य भक्त्या मे, शक्तिः सर्वंसहा सदा।।3।।

पार्श्वनाथे मतिर्मे स्यात्, यावत् सिद्धिर्न मे भवेत्।
भोः पार्श्वनाथ! मां रक्ष, शरण्य एक एव त्वं।।4।।

(24) श्री महावीर जिनस्तुतिः

त्रैलोक्याधिपतिर्वीरः, महावीरोंऽतिमो जिनः।
महावीरमहं भक्त्या, श्रयामि भवभीरुतः।।1।।

महावीरेण सद्दृष्टिः, बभूव गौतमो गणी।
महावीराय सत्प्रीत्या, नमो नमोऽस्तु संततम्।।2।।

महावीरान्महान् धर्मः, अहिंसा परमो भुवि।
महावीरस्य सत्कीर्तिः, विश्वऽस्मिन् वर्ततेऽधुना।।3।।

महावीरे गुणाः सर्वे-ऽनन्तानंताः स्वयं स्थिताः।
महावीर! कृपां कृत्वा, पूर्णां ज्ञानमतीं कुरू।।4।।

मृत्युंजयिपदप्राप्त्यै, केवलं त्वद्पदद्वयं।
आश्रयामि स्मरामि च, संततं भक्तिभावतः।।5।।

प्रशस्तिः

दिग्दिक्वाणद्विवीराब्दे[1], पूर्णायामाश्विने सिते।
ऋषभदेवपुराख्ये, तीर्थंकरस्तुतिः कृतिः।।1।।

पूर्यते भक्तिभावेन, स्वात्मस्वस्थप्रदायिका।
भवे भवे जिने भक्ति-र्यावत् सिद्धपदं भवेत्।।2।।

सर्वोच्चप्रतिमा यावत्, पर्वतोपरि राजते।
अहिंसा परमो धर्मः, ऋषभदेवशासनम्।।3।।

सप्तविभक्तियुक्ता हि, रचनैषातिशायिनी।।
अर्हज्ज्ञानमतीं कुर्यात्, प्रदद्यात् नः स्तुत्यं फलम्।।4।।

---

1. वीर सं. 2544।

(1) श्री आदिनाथ स्तुतिः

(सप्तविभक्ति समन्वित)

-अनुष्टुप् छंदः-

आदिनाथो जगत्स्वामी, प्रथमस्तीर्थकृन्मतः।
आदिनाथमहं नित्य-माश्रयामि हितेच्छया।।1।।

आदिनाथेन सृष्टिः स्यात्, षट्स्वकर्मविधायिनी।
आदिनाथाय मे नित्य-मनंतशो नमो नमः।।2।।

आदिनाथाद् जिनो धर्मः, गृहि-मुन्योर्द्विभेदतः।
आदिनाथस्य पुत्रास्ते, शतैका हि शिवंगताः।।3।।

आदिनाथे स्थिरा बुद्धिः, मे स्याद् भवान्तकारिणी।
हे आदिनाथ! मां रक्ष, भवाद् भव्यांश्च सर्वदा।।4।।

(2) श्री आदिनाथ स्तुतिः

आदिनाथो युगस्रष्टा, त्वामादिनाथमाश्रये।
आदिनाथेन सृष्टिः, स्यादादिनाथाय ते नमः।।1।।

आदिनाथाद् दया धर्मः, आदिनाथस्य चिन्महः।
आदिनाथे रुचिर्मेऽस्तु, भो आदिनाथ! रक्ष माम्।।2।।

(3) श्री ऋषभदेव स्तुतिः

ऋषभोऽयं महादेवः, ऋषभमाश्रयाम्यहम्।
ऋषभेण कृता सृष्टिः, ऋषभाय नमो नमः।।1।।

ऋषभात् सार्वतीर्थोऽभूत्, ऋषभस्य वृषो दया।
ऋषभे कुरू सद्भक्तिं, ऋषभ! त्वं पुनीहि माम्।।2।।

(4) श्री ऋषभदेव स्तुतिः

ऋषभो युगब्रह्मा त्वं, ऋषभमाश्रयाम्यहम्।
ऋषभेण हतो मृत्युः, ऋषभाय नमो नमः।।1।।

ऋषभाज्जीवनोपायः, ऋषभस्य वृषो दया।
ऋषभे स्यात् स्थिरा भक्तिः, पाहि मां ऋषभ! प्रभो!।।2।।

(5) श्री ऋषभदेव स्तुतिः

श्रीऋषभो जगन्नाथः, त्वां ऋषभं दधे हृदि।
ऋषभेण जितो मृत्युः, ऋषभाय नमो नमः।।1।।

ऋषभाद् द्विविधो मार्गः, ऋषभस्य वचोऽमृतं।
ऋषभेऽनंतसंपत्तिः, ऋषभेश्वर! पाहि माम्।।2।।

(6) श्री गौतमस्वामी स्तुतिः

श्री गौतमः पिता लोके, इंद्रभूतिश्च नामभाक्।
श्रीगौतमं नुताः सर्वे, इन्द्राद्या भक्तिभावतः।।1।।

श्रीगौतमेन सज्ज्ञानं, प्राप्तं वीरस्य दर्शनात्।
श्रीगौतमाय मे नित्यं, नमो जन्मप्रहाणये।।2।।

श्रीगौतमात् प्रभोर्दिव्य-ध्वनिसारः सुलभ्यते।
श्रीगौतमस्य सद्भक्त्या, तरिष्यामि भवांबुधिं।।3।।

श्रीगौतमे द्विदशांगी, वाणी प्रस्फुरिता त्वरं।
श्रीगौतमगुरो! स्वामिन्!, मां त्राहि भवक्लेशतः।।4।।

(7) श्री सरस्वती स्तुतिः

सरस्वती जगन्माता, जिनवक्त्राम्बुजा सती।
सरस्वती-मुपासन्ते, भक्त्या सर्वे मुनीश्वराः।।1।।

सरस्वत्या भुक्तिं मुक्तिं, प्राप्नुवन्त्यपि भाक्तिकाः।
सरस्वत्यै नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्य-मनन्तशः।।2।।

सरस्वत्याः बुधाः भेद-ज्ञानमप्याप्नुवन्ति च।
सरस्वत्याः प्रसादेन, तरन्ति भवसागरम्।।3।।

सरस्वत्यां मतिं धृत्वाऽ-हर्निशं स्वात्मचिन्तनम्।
सरस्वति! प्रसीद त्वं, मामनुगृह्य पालय।।4।।

(8) श्री षट्खण्डागम स्तुतिः

श्रीषट्खंडागमो ग्रन्थः, ज्ञानवार्धिः सुरैर्नुतः।
श्रीषट्खण्डागमं ग्रन्थं, स्तुवन्ति मुनिपुंगवाः।।1।।

श्रीषट्खण्डागमेनात्र, ज्ञानदीधितयः स्फुटाः।
श्रीषट्खण्डागमायास्मै, नमो मे कोटिशो मुदा।।2।।

श्रीषट्खण्डागमात् सारः, पंचसंग्रहनामतः।
श्रीषट्खण्डागमस्याद्य, टीकाद्वयं जगत्नुतं।।3।।

श्रीषट्खण्डागमे बुद्धि-रभीक्ष्णं मे भवेद् ध्रुवं।
श्रीषट्खण्डागम! त्वं मे, देहि ज्ञानं सुकेवलम्।।4।।

श्रीवीरस्याब्जसंभूता, गणाधीशावतारिता।
श्रीधरसेनसूरेश्च, शिष्यद्वयेन धारिता।।5।।

पुष्पदंतभूतबली-मुनिभ्यां गुंफिताऽधुना।
धवलाटीकया सूरिः, वीरसेनो ददौ भुवि।।6।।

सिद्धान्तचिंतामणिः सा, टीका मे स्थीयतामिह।
यावत्तावत् 'ज्ञानमती', केवलं नहि भूयताम्।।7।।

(9) चारित्रचक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर स्तुतिः

श्रीशान्तिसागरः सूरिः, प्रथमाचार्य इष्यते।
श्रीशान्तिसागराचार्यं, श्रयामि वृत्तलब्धये।।1।।

श्रीशांतिसागरेणात्र, मुनिमार्गः प्रदर्शितः।
श्रीशान्तिसागरायाद्य, कोटिशो मे नमो नमः।।2।।

श्रीशान्तिसागराचार्यात्, जाता धर्मप्रभावना।
श्रीशान्तिसागरस्येह, भाक्तिका मोक्षमार्गिणः।।3।।

श्रीशान्तिसागराचार्ये, समाविष्टा गुणा यतेः।
हे शान्तिसागराचार्य! मामुद्धर भवाब्धितः।।4।।

(10) चारित्रचूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर स्तुतिः

श्रीवीरसागराचार्यः, पट्टसूरिर्हि विश्रुतः।
श्रीवीरसागराचार्यं, वंदे भक्त्या पुनः पुनः।।1।।

शिष्याः सुशिक्षिताः नित्यं, वीरसागरसूरिणा।
नमोऽस्तु भक्तिभावेन, वीरसागरसूरये।।2।।

श्रीवीरसागराचार्यात्, ख्याता पट्टपरम्परा।
श्रीवीरसागरस्यापि, गांभीर्यादिगुणाः स्थिताः।।3।।

श्रीवीरसागराचार्ये, विद्वान्सोऽपि नता मुदा।
श्रीवीरसागराचार्य!, कृपां कृत्वा पुनीहि माम्।।4।।

सम्यग्ज्ञानमतीप्राप्त्यै, केवलं त्वत्पदद्वयम्।
आश्रयामि स्मरामि च, संततं भक्तिभावतः।।5।।

(1) ॐ ह्रीं अनंतानंततीर्थंकरादि-मोक्षगामिमहापुरुष जन्मभूमि-अयोध्या शाश्वततीर्थक्षेत्राय नमः।
(2) ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरजन्मभूमि अयोध्या तीर्थक्षेत्राय नमः।
(3) ॐ ह्रीं निर्वाणभूमि श्री सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय नमः।
(4) ॐ ह्रीं अनंतानंततीर्थंकरादिमोक्षगामिमहापुरुषनिर्वाणभूमि-सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय नमः।

जिन स्तुति

जिनः शतेन्द्र वंद्योऽस्ति, जिनं भक्त्या श्रयाम्यहम्।
जिनेन दीयते सौख्यं, जिनाय कोटिशो नमः।।1।।
जिनाद् धर्मोऽभवज्जैनो, जिनस्य नाम क्षेमकृत्।
जिने भक्तिः स्थिरा मे स्यात्, जिन! त्वं रक्ष रक्ष माम्।।2।।

तीर्थंकर स्तुति

(स्वरचित निरंजन स्तुति से)

स्वःस्वं स्वेन स्वयं स्वस्मै, स्वस्मात् स्वस्मिन् स्थितोप्यहं।
स्यां स्वयंभूः स्वतः स्वामिन्। कथं त्वत्तोऽतरं च मे।।1।।

जम्बूस्वामी स्तुति

(स्वरचित जम्बूस्वामी स्तुति से)

स्वयमपि निजसम्यग्ज्ञानचर्या-बलेन।
हृदयसरसिजे स्वं स्वेन त्वं चिंतयित्वा।।
मुनिगणनुत! स्वस्मिन् स्वस्य हेतोश्च तिष्ठन्।
निजकृतिवशतोऽभूस्त्वं स्वयंभूः स्तुवे त्वाम्।।1।।

स्वयं आप निज सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित रत्नत्रय से।
हृदय कमल में निज के द्वारा निज में निज को तुम ध्याके।।
जम्बूस्वामी निज हेतू निज में स्थित हो तुम निजकृति से।
हुए स्वयंभू स्वयं क्रिया से तव संस्तवन करूँ मुद से।।1।।

प्रथम पंचमहापुरुष स्तुतिः

श्रीमान् ऋषभदेवस्त्वं, प्रथमस्तीर्थकृन्मतः।
सर्वा विद्याकला युष्मद्, नमस्तुभ्यं शिवाप्तये।।1।।

प्रथमश्चक्रवर्ती यो, भरतेशो भुवि श्रुतः।
नमस्तस्मै सुभक्त्याहं, यस्य नाम्नेह भारतम्।।2।।

प्रथमः कामदेवो यो, बाहुबली महाबली।
वर्षैकः प्रतिमायोगी, बलर्द्धिप्राप्तये नमः।।3।।

गणीन्द्रः प्रथमो ज्ञेयः, ऋषभसेननामभाक्।
चतुर्ज्ञानर्द्धिसंपन्नो, नमस्तुभ्यं स्वसंपदे।।4।।

प्रथमो मोक्षगामी योऽ-नंतवीर्यः प्रभोः सुतः।
गुणानन्तर्द्धिसंप्राप्त्यै, ते नमोऽस्तु सदा मुदा।।5।।

पंचमहापुरूषांस्तान्, युगादौ प्रथमान् भुवि।
पंचमज्ञानमत्याप्त्यै, एषां च प्रतिमाः स्तुवे।।6।।

******

(1) ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवभरतबाहुबलीऋषभसेन-अनंतवीर्यस्वामिभ्यो नमः।

(2) ॐ ह्रीं प्रथमतीर्थंकरश्रीऋषभदेव-प्रथमचक्रवर्तिभरत-प्रथम-कामदेवबाहुबलि-प्रथमगणधरऋषभसेन-प्रथममोक्षप्राप्त-श्रीअनंतवीर्य-स्वामिभ्यो नमः।

प्रथम पंच महापुरुष स्तुति

जय जय आदीश्वर ऋषभदेव, इस युग के प्रथम तीर्थकर हो।
जय जय कर्मारिजयी जिनवर तुम परमपिता परमेश्वर हो।।
जय युगस्रष्टा असि मषि आदिक किरिया उपदेशी जनता को।
त्रय वर्ण व्यवस्था राजनीति गृहिधर्म बताया परजा को।।1।।

निज पुत्र पुत्रियों को विद्या अध्ययन करा निष्पन्न किया।।
भरतेश्वर को साम्राज्य सौंप शिवपथ मुनिधर्म प्रशस्त किया।।
इक सहस वर्ष तप करके प्रभु कैवल्यज्ञान को प्रकट किया।
अठरह कोड़ाकोड़ी सागर के बाद मुक्ति पथ प्रकट किया।।2।।

तुम प्रथम पुत्र भरतेश प्रथम चक्रेश्वर हो षट्खंडजयी।
जिन भक्तों में थे प्रथम तथा अध्यात्म शिरोमणि गुणमणि ही।।
सब जन मन प्रिय थे सार्वभौम यह भारतवर्ष सनाथ किया।
दीक्षा लेते ही क्षण भर में निज केवलज्ञान प्रकाश किया।।3।।

हे ऋषभदेव सुत बाहुबली तुम कामदेव प्रथमे प्रगटे।
सुत थे द्वितीय पर अद्वितीय चक्रेश्वर को भी जीत सके।।
तुमने दीक्षा ले एक वर्ष का योग लिया ध्यानस्थ हुए।
वन लता भुजाओं तक फैली सर्पों ने वामी बना लिये।।4।।

इक वर्ष पूर्ण होते ही तो भरतेश्वर ने आ पूजा की।
उस ही क्षण तुम हुए निर्विकल्प तब केवलज्ञान की प्राप्ति की।।

श्री ऋषभदेव के तृतीय पुत्र, माँ यशस्वती के नंदन हो।
तज पुरिमतालपुर नगर राज्य, मुनि बने जगत अभिनंदन हो।5।।
सब ऋद्धि समन्वित गणधर गुरु, हे "ऋषभसेन" तुमको वंदन।
तुम प्रथम तीर्थंकर के पहले, गणधर हम करते नित्य नमन।।
ऋषभेश्वर सुत श्री अनंतवीर्य, ये सबसे पहले मोक्ष गये।
इनके चरणों में नित्य नमूँ, इन वंदत वांछित सिद्ध भये।।6।।
युग के ये पाँच प्रथम माने, ये महापुरुष सुरवंदित हैं।
इन भक्ती स्तुति करने से होता मुझ हृदय प्रफुल्लित है।।
मैं पंचम ज्ञानमती हेतू, पंचांग प्रणाम करूँ नित ही।
भव पंच परावर्तन छूटे, पंचमगति प्राप्ती चहूँ सही।।7।।

-दोहा-

वीर अब्द पच्चीससौ, पैंतालिस विख्यात।
आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, स्तवन किया नतमाथ।।8।।
पढो पढ़ावो भक्ति से, मनुज जन्म हो धन्य।
पंचम चारित प्राप्त कर, पावो परमानन्द।।9।।

******

पंचमहापुरुष वंदना (लघु)

श्री ऋषभदेव श्री भरत बाहुबलि, ऋषभसेन व अनंतवीर्य।
ये प्रथमतीर्थकर प्रथम चक्र-वर्ति व प्रथम कामदेव शूर।।
श्री ऋषभसेन प्रथमहि गणधर व अनंतवीर्य शिव गये प्रथम।
इन प्रथम पंचयुगपुरुषों को, पंचम सुज्ञानमती हेतु नमन।।1।।